



SHRI BHANUBHAI CHUNILAL CHITARA

Shri Bhanubhai Chitara is a highly regarded artisan of the Mata Ni Pachedi craft, known for his lifelong dedication to this traditional art form.

2. Born on 26th October, 1957 in Ahmedabad Gujarat, Shri Chitara learned the craft from his parents. He spent his entire life working in the field of Mata Ni Pachedi craft, creating beautiful and intricate paintings that depicted scenes from Hindu mythology and religious stories. His works were characterized by their bold colours, intricate detailing, and stunning compositions, which captured the imagination of all.

3. Over the years, Shri Chitara became a highly respected figure in India of Mata Ni Pachedi craft. Mata Ni Pachedi craft is a traditional art form that has a history of over 750 years. It is a form of religious painting that originated in Gujarat and depicts scenes from Hindu mythology and religious stories. This art form is highly regarded for its intricate detailing, bold colors, and stunning compositions. One of the unique aspects of this craft is that it has been passed down through generations within families. He participated in various exhibitions and cultural events across the country, showcasing his stunning creations and spreading awareness about this traditional art form. His works were not just beautiful pieces of art, but also served a deeper purpose. They were created with the intention of spreading religious awareness and helping people connect with their spiritual beliefs.

4. Shri Chitara passed on his knowledge and skills to his family members, ensuring that the craft will continue to thrive and evolve for generations to come. His contributions to this craft, along with the contributions of many others, have helped to preserve and promote this beautiful traditional art form, ensuring that it will continue to inspire and touch the lives of people for many more generations to come.

5. Shri Chitara's contributions to the field were recognized by the Government of India on two separate occasions. In 2006, he was awarded the National Merit for his exceptional work in the field of Mata Ni Pachedi craft. In 2012, he received the National Award for his outstanding contribution to the Mata Ni Pachedi craft. His stunning works of art not only captured the essence of Hindu mythology and religious stories but also helped to spread awareness and understanding of these beliefs. These awards stand as a testament to his talent, dedication, and hard work in the field of Mata Ni Pachedi craft.



श्री भानुभाई चुनीलाल चितारा

श्री भानुभाई चितारा माता नी पछेड़ी शिल्प के एक सम्मानित कारीगर हैं, जो इस पारंपरिक कला के प्रति अपने आजीवन समर्पण के लिए विख्यात हैं।

2. श्री चितारा का जन्म 26 अक्टूबर, 1957 को अहमदाबाद, गुजरात में हुआ। उन्हें अपने माता-पिता से शिल्प धरोहर में मिला। उन्होंने अपना पूरा जीवन माता नी पछेड़ी शिल्प के क्षेत्र में काम करते हुए गुजारा है, और हिंदू पौराणिक कथाएं और धार्मिक कहानियां के दृश्य उकेरते हुए सुंदर और जटिल चित्र बनाए हैं। उनके कार्यों की विशेषता उनके चमकते रंग, सूक्ष्म विवरण और अद्भुत बनावट हैं, जो सबको मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

3. समय के साथ, श्री चितारा भारत में माता नी पछेड़ी शिल्प के एक अतिसम्मानित कारीगर बने। माता नी पछेड़ी शिल्प एक पारंपरिक कला है, जिसका 750 से अधिक वर्षों का इतिहास है। यह धार्मिक चित्रकला का एक रूप है जिसकी उत्पत्ति गुजरात में हुई थी और इसमें हिंदू पौराणिक कथाओं और धार्मिक कहानियों के दृश्यों को दर्शाया जाता है। यह कला रूप इसके सूक्ष्म विवरण, चमकते रंगों और अद्भुत बनावट के लिए प्रसिद्ध है। इस शिल्प का एक अनूठा पहलू यह है कि यह परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। उन्होंने देश भर में विभिन्न प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया, अपनी शानदार कृतियों का प्रदर्शन किया और इस पारंपरिक कला के बारे में जागरूकता फैलाई। उनकी रचनाएं न केवल उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं, बल्कि एक गहरे उद्देश्य की पूर्ति भी करती हैं। वे धार्मिक जागरूकता फैलाने और लोगों को उनकी आध्यात्मिक जड़ों से जोड़ने के इरादे से बनाई गई थीं।

4. श्री चितारा ने अपना ज्ञान और कौशल विरासत के रूप में अपने परिवार के सदस्यों को दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह शिल्प परंपरा जीवित रहेगी और विकसित होती रहेगी। इस शिल्प में उनके योगदान के साथ-साथ कई अन्य लोगों का योगदान इस खूबसूरत पारंपरिक कला के संरक्षण और संवर्धन में सहायक हुआ है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि यह शिल्प आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरित और प्रभावित करेगी।

5. इस क्षेत्र में श्री चितारा के योगदान को भारत सरकार द्वारा दो अलग-अलग अवसरों पर सम्मानित किया गया। 2006 में, उन्हें माता नी पछेड़ी शिल्प के क्षेत्र में उनके असाधारण कार्य के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। 2012 में, उन्हें माता नी पछेड़ी शिल्प में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। कला के उनके शानदार कार्यों ने न केवल हिंदू पौराणिक कथाओं और धार्मिक कहानियों के मूल भाव को सफलतापूर्वक उकेरा बल्कि इन मान्यताओं के बारे में जागरूकता और समझ फैलाने में भी मदद की। ये पुरस्कार माता नी पछेड़ी शिल्प के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा, समर्पण और कठिन परिश्रम के प्रमाण हैं।